



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र (16-02-2020)

प्राणों से प्यारे, दिलाराम बाप के दिलरूबा बच्चे, सदा बाबा को दिल में बसाने वाले, एक बाप दूसरा न कोई के महामन्त्र से सदा विजयी भव के वरदानी, भोलानाथ बाप को सच्ची दिल से राजी करने वाले राजयुक्त योगयुक्त हमारी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी बाबा के अथक सेवाधारी बच्चे, हमारे मीठे भाई बहिनें, ईश्वरीय स्नेह भरी याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - शिव भोलानाथ बाबा का दिव्य अवतरण दिवस सभी खूब धूमधाम से मना रहे हैं। सब तरफ बहुत अच्छी सेवायें चलती हैं। अनेक स्थानों पर बाबा को प्रत्यक्ष करने के लिए नये नये प्रकार के कार्यक्रम रखते हैं। सब समाचार मधुबन में पहुंचते रहते हैं। अभी फिर होली का पावन त्योहार भी भारत में सभी खूब धूमधाम से मनाते हैं। बाबा कहते बच्चे होली सो हो ली, बीती को बिन्दी लगा दो। होली (पवित्र) बन जाओ। एक दो को रूहानियत का ऐसा पक्का रंग लगाओ जो देह अभिमान का अंश भी समाप्त हो जाए। फिर आपस में संस्कार मिलन की रास करो। एक दो के साथ स्नेह सम्पन्न मंगल मिलन मनाओ। कितने अर्थ सहित भक्ति के यह यादगार त्योहार बने हुए हैं। हम सब तो उसी अलौकिक रीति से मनाते और एक दो को उमंग-उत्साह भरी बधाईयां देते हैं।

बाबा तो हम बच्चों को होलीहंस बना रहा है। जैसे हंस दूसरे पंखियों से न्यारा है। वह तैरना भी जानता है तो उड़ना भी जानता है। ऐसे हम भी जितना आत्म अभिमानी स्थिति में रहते हैं उतना उड़ते हैं। मैं आत्मा हूँ, बाबा ने प्यार से समझाया है कि हर आत्मा का पार्ट न्यारा है, बना बनाया ड्रामा है लेकिन अभी बदलने का समय है। हम बदलेंगे तो जग बदलेगा.. बहुत सहज बात है। बाबा कहता है मैं किसी को प्रेरणा नहीं देता हूँ, लेकिन हमारा जीवन प्रेरणा देने लायक हो। कोई गलती न हो। संगमयुग में छोटी गलती भी बहुत नुकसानदायक है। अगर हमारी स्थिति आत्म अभिमानी है, शिवबाबा की याद है तो कार्य व्यवहार में सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी बनना सहज है। हमारा बाबा कितना मीठा, कितना प्यारा है, बाबा सर्व गुणों में सम्पन्न सागर है इसलिए बहुत प्यारा लगता है। तो पुरुषार्थ में मुझे भी बाबा के समान प्यारा और मीठा बनना है, सर्व गुण सम्पन्न बनना है। छुप-छुप करके हर एक के गुण देख लो, किसी के भी अवगुण नहीं देखना है।

साकार में बाबा ने ऐसा ध्यान खिचवाया है कि हर किसी की एक जैसी पालना हो। हर बात में एक्ज्युरेट बनना है। अलर्ट रहना है, एक्ज्युरेट और आलराउण्डर होकर चलना है। जो भी सेवा हो, यज्ञ की हर सेवा बहुत प्रेम, प्यार से करना है। पांच शब्द याद रखना - पहला बाबा, दूसरा मैं आत्मा। तीसरा - यज्ञ की सेवा, चौथा - ईश्वरीय परिवार और पांचवा - संगम का यह कल्याणकारी समय। समय कभी व्यर्थ नहीं गंवाना है, अभी समय बहुत अच्छा है जो करना है अब कर लो। कभी कोई फिकर में टाइम नहीं गंवाना है। मैं तो सदा फिकर से फारिग बेफिकर बादशाह रही हूँ। सदा यही याद रहता है मैं कौन? मेरा कौन? इसी स्मृति में रहने से मेरे को देख और भी रहेंगे इससे पुण्य का खाता जमा हो जायेगा। तो पुण्यात्मा बनने के लिए सदा स्मृति में, उमंग-उत्साह में रहना। भाव-स्वभाव के चक्कर और टक्कर से फ्री रहना है।

बोलो, हमारे मीठे-मीठे भाई बहिनें समय के इशारे को समझते हुए ऐसी स्थिति बनाई है ना! अब अपना समय, संकल्प, श्वास और सम्पत्ति सब कुछ सफल कर सफलता मूर्त बनना है। देवता तो पीछे बनेंगे पहले सच्चा पक्का ब्राह्मण सो फरिश्ता बनना है। अच्छा।

सभी को हमारी बहुत-बहुत याद प्यार स्वीकार हो।

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी



ये अव्यक्त इशारे



“संस्कार मिलन की रास करो, सच्ची होली मनाओ”

1) होली का अर्थ याद रखना है। “होली” जो कुछ हुआ वह हो गया। हो लिया। जो सीन हुई होली अर्थात् बीत चुकी। इसके लिए ड्रामा की ढाल सदा साथ रखो तो पक्का रंग लग जायेगा। अगर होली का अर्थ जीवन में नहीं लायेंगे तो रंग कच्चा रह जायेगा। पक्का रंग रंगने के लिए हर वक्त सोचो हो ली। जो बीता वह हो गया। ऐसी होली मनाओ और संस्कार मिलन की रास करो।

2) जैसे होली पर लोग आपस में गले मिलते हैं, ऐसे यहाँ संस्कार मिलन ही मंगल मिलन है। एक दो के संस्कारों को जान करके, एक दो के स्नेह में एक दो से मिल-जुल कर रहना है। जैसे कोई से विशेष स्नेह होता है तो उनसे मिक्स हो जाते हो, ऐसे एक दो में मिक्स होने के लिए जितना ही नॉलेजफुल उतना ही सरल स्वभाव बनो।

3) अब बापदादा संस्कार मिलन की महारास देखना चाहते हैं, इसके लिए पहले स्वयं को एडजस्ट कर दूसरों से संस्कार मिलाने का दृढ़ संकल्प करो। एडजस्ट करने की शक्ति संस्कारों को मिला देगी। बापदादा से तो मिलन मनाते हो लेकिन बड़े से बड़ा मिलन है आपस में संस्कारों का मिलन। जब यह संस्कार मिलन हो जायेगा तब जयजयकार होगी, इसके लिए मधुरता के गुण को धारण करो। कटाक्ष के बोल वा कटु बोल नहीं बोलो।

4) जैसे मिलन में हाथ मिलाते हैं वा गले मिलते हैं। ऐसे यह मिलन है संस्कार मिलन – अगर सबके संस्कार मिलकर बाप समान हो जाएं, सबके संस्कार एक समान हो जाएं तो एक राज्य, एक धर्म वाली दुनिया आ जायेगी।

5) जैसे बाप के संस्कार सदा उदारचित, कल्याणकारी, निःस्वार्थ, रहमदिल, परोपकार आदि हैं। ऐसे आप बच्चों के भी संस्कार हो। सदा आपस में एकमत, स्नेही, सहयोगी बन, संस्कार मिलन करना - यही महानता है। संस्कारों का टक्कर न हो लेकिन सदा संस्कार मिलन की रास करते रहो। संस्कारों को मिलाना अर्थात् सम्पूर्णता को और समय को समीप लाना।

6) एक दो के स्नेही तब बनेंगे जबकि संस्कारों और संकल्पों को एक दो से मिलायेंगे। लेकिन ध्यान रहे आपकी स्थिति स्तुति के आधार पर नहीं हो। नहीं तो डगमग होते रहेंगे। कई बच्चे जब कुछ करते हैं तो उसके फल की इच्छा रखते हैं। स्तुति होती है तो स्थिति अच्छी रहती है अगर कोई निंदा कर देता है तो निधनके बन जाते हैं, अपनी स्टेज को छोड़ एक दो से किनारा कर लेते हैं लेकिन स्तुति-निंदा में समान स्थिति रहे तो संस्कार टकरायेंगे नहीं।

7) संस्कार मिलन की रास करने के लिए “बालक और मालिकपन” का गुण समान रूप में चाहिए। बालकपन अर्थात् निरसंकल्प हो जो आज्ञा मिले उस पर चलना। मालिकपन अर्थात् अपनी राय देना। जहाँ बालक बनना है वहाँ अगर मालिक बन जायेंगे तो संस्कारों का टक्कर होगा। तो राय दी, मालिक बने, फिर जब फाइनल होता है तो बालक बन जाना चाहिए।

8) मन में जब कोई संकल्प उत्पन्न होता है तो उसमें सच्चाई और सफाई चाहिए। अन्दर में कोई भी भाव-स्वभाव, पुराने संस्कारों वा विकर्मों का किचरा नहीं हो। जो ऐसी सफाई वाला होगा वही सच्चा होगा और जो सच्चा होगा वह सबका प्रिय होगा। उसमें भी सबसे पहले वह प्रभुप्रिय होगा। फिर दैवी परिवार का प्रिय होगा। संस्कारों की टक्कर से बच जायेगा।

9) यह देह रूपी वस्त्र किसी भी संस्कार से लटका हुआ न हो। जब सभी पुराने संस्कारों से न्यारा हो जायेंगे तो फिर अवस्था भी न्यारी हो जायेगी इसलिए सभी बातों में इज़ी रहो। जब खुद सभी में इज़ी रहेंगे तो सभी कार्य भी इज़ी होंगे और पुरुषार्थ भी इज़ी होगा।

10) संस्कार मिलन की रास करने के लिए कुछ मिटाना पड़ेगा, कुछ समाना पड़ेगा, यह मेरे संस्कार हैं, यह शब्द भी मिट जाये। इतने तक मिटना है जो पुरानी नेचर बदलकर ईश्वरीय नेचर बन जाये।

11) सदैव यही कोशिश करनी है कि मेरी चलन, संकल्प,

वाणी, हर कर्म सुखदाई हों। यह है ब्राह्मण कुल की रीति। संस्कारों को मिलाने के लिए दिलों का मिलन करना पड़ेगा, इसके लिए कुछ भुलाना पड़ेगा, कुछ मिटाना और कुछ समाना पड़ेगा।

12) संस्कार मिलन की रास करने के लिए एक दो की बातों को स्वीकार करो और सत्कार दो। अगर स्वीकार करना और सत्कार देना, यह दोनों ही बातें आ जाएं तो सम्पूर्णता और सफलता दोनों ही समीप आ जायेंगी। जब एक अनेकों को सम्पूर्ण संस्कार वाला बना लेंगे तब समाप्ति होगी।

13) जितना आपस में संस्कारों को समानता में लायेंगे उतना ही समीप आयेंगे। जैसे साकार रूप के संस्कार उपराम और साक्षी दृष्टा के रहे, यही साकार के सम्पूर्ण स्थिति के श्रेष्ठ लक्षण थे। इन संस्कारों में समानता लानी है। इससे ही सर्व के दिलों पर विजयी होंगे और जो संगम पर सर्व के दिलों पर विजयी बनता है वही भविष्य में विश्व महाराजन् बनता है।

14) जितना एक दो के समीप आते जा रहे हो उतना एक दो

को सम्मान देते चलो। जितना सम्मान देंगे उतना सारी विश्व आप अभी का सम्मान करेगी, सम्मान देने से सम्मान मिलेगा और सम्मान देने से संस्कार मिलन भी सहज हो जायेगा।

15) यदि आपको कभी कोई का विचार स्पष्ट नहीं लगता है तो भी ना कभी नहीं करनी चाहिए। शब्द सदैव हॉ जी निकलना चाहिये। समय को देखकर ईशारा दे सकते हो, अगर उसी समय ना कहकर कट करेंगे तो संस्कार टकरायेंगे, इसलिए हॉ जी कर धरनी बनाओ, फिर समय देख इशारा दो, यही विधि है संस्कार मिलन की।

16) ब्राह्मण अर्थात् सबके दिल पसन्द स्वभाव-संस्कार वाले। मैजारिटी 95 परसेन्ट के दिलपसन्द जरूर हो। दिल पसन्द अर्थात् सर्व से लाइट। हर बोल, कर्म और वृत्ति से हल्कापन अनुभव हो। आपके कर्म, वृत्ति उसको परिवर्तन करे, इसके लिए सहनशक्ति धारण करो। भल कोई किसी भी संस्कार के वश परवश आत्मा हो, उस आत्मा को भी सहयोग दो। कोई का हद का संस्कार प्रभावित न करे।

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

22-03-15

मधुबन

“आजकल और कुछ भले नहीं करो सिर्फ मिसाल बनो, ध्यान रहे जो कर्म मैं करूंगा मुझे देख सब करेंगे”

दादी जानकी

विकर्माजीत बनने की निशानी क्या है? कोई विकल्प आ नहीं सकता। इसमें 3 बातें हैं तन, मन, धन.. वह पूरा समर्पण है। न तन अपना है, न मन अपना है, न धन अपना है। जहाँ हमारा मन होगा वहाँ हमारा तन होगा, जहाँ तन है अभी तन में आत्मा है पर मन कहाँ है? मनमनाभव इसलिए भले शरीर की आयु बड़ी हो जाए, पर आत्मा का बल, योग का बल, सेवा का फल, सेवा भी वन्दरफुल है।

अभी इस बारी विदेशी भाई बहनें बहुत आये हुए थे, कहाँ से पैदा हुए, किसने पालना की है? अभी भी कौन पालना कर रहा है? निश्चयबुद्धि विजयंती, निश्चय में विजय है, यह अनुभव करने से औरों को भी संग का रंग लगाते इतने आ गये क्योंकि जैसे कहते हैं जैसा अन्न वैसा मन, जैसा संग वैसा रंग, जैसा पानी वैसी वाणी। मधुबन का पानी जो है ना वो भी वाणी को बदल देता है। मधुबन के पानी से, यहाँ के वातावरण से कितनी पाँवर आ जाती है। दृष्टि की बहुत वैल्यु है ना, तो अभी

सभी को दृष्टि का महत्व होना चाहिए। दृष्टि किसलिए लेते हैं? दृष्टि में बाबा होने से शक्ति मिल जाती है। उस दृष्टि ने ही आप सबको बड़ा किया है। बाबा ने शुरू से ले करके विश्व सेवा के निमित्त बनने का संस्कार भर दिया है। दूसरा किसी के भी नाम रूप में न फंसना, न फंसाना। यह बाबा ने अच्छी पालना दी है और नाम भी वही है, सिर्फ जानकी के बदले बाबा जनक कहता था। जनक कह करके ट्रस्टी बना दिया। कारोबार में ट्रस्टी अन्दर में विदेही बनने की प्रैक्टिस। भले आज भी चिटचैट में मैं बाबा को कहती हूँ, बाबा सभी मेरा जन्म दिन क्यों मना रहे हैं? मैं तो नहीं चाहती हूँ, मैं अभी शरीर में रहूँ। तो बाबा कहता है शरीर में रखता हूँ मिसाल बनाने के लिए और हमको भी अन्दर भावना है, ऐसी मिसाल वाली लाइफ बननी चाहिए जो औरों को ऐसा बनना इज़ी हो जाये।

जब तक थोड़ा चांस है तब तक रोज़ शाम को मैं सबसे मिलूँ, यह मिलने में अन्दर से बहुत खुशी होती है। मतलब

अभी बाबा आपकी याद आती है, जो आप कहते हो सो बनने के लिए। बाबा अभी जो आप कहते हो वही बनना है बस। बाबा आप बने हैं, आपको देखके कितनों को बनने की प्रेरणा मिली है। हरी, वरी, करी वाला अवगुण न हो। न वरी न हरी न करी। कभी कड़वा शब्द, थकावट का शब्द न अन्दर से न मुख से निकले। शकल ऐसी थकी हुई न दिखाई पड़े, ऐसा पुरुषार्थ करना है, मिसाल बनना है। अभी ऐसे मिसाल बनेंगे तो बाबा खुश हो जायेगा।

निमित्त बनने के लिए 5 गुण चाहिए। पवित्रता 100 परसेन्ट, फिर सत्यता ऑटोमेटिकली काम करती है, फिर धैर्यता, मैंने देखा है सेवा में, चाहे सम्बन्ध में धैर्य बहुत चाहिए। धीरज

मीठा बनाती है। धीरज है तो नम्रता काम करती है। कभी भी अभिमान नहीं होता है इसलिए नम्रता बहुत जरूरी है। नम्रता से फिर मधुरता। यह पाँच बातें नेचुरल लाइफ में एक मिसाल बनाती है। परन्तु फिर मैं कहती हूँ इसमें जो एडीशन या थोड़ी कमी हो सभी उस कमी को पूरा करें तो कितनी खुशी की बात है। आजकल और कुछ नहीं करना है एक मिसाल बनने का एम रखें, जैसा कर्म मैं करूँगी मुझे देख और करेंगे इसलिए बड़ा खबरदार होशियार सावधान रहना है। ऐसा सावधान रहना है जो एकानामी और एकनामी कभी सेवा अर्थ भी फालतू खर्च नहीं किया है। एक के नाम से काम करो फिर एकानामी से करो, तो यह सब बातें मिसाल बनने के लिए बहुत काम आयेगी। अच्छा।

दूसरा क्लास

“अपने चित्त को बड़ा साफ और सच्चाई से भरपूर रखो, चिंतन में एक बाबा और बाबा का ज्ञान हो”

ओम् शान्ति। मैं कौन, मेरा कौन? ओम् शान्ति में यह फीलिंग आती है। सारे ज्ञान का सार मैं और मेरा और अब क्या करने का है? (हिस्ट्री सुनाई) लौकिक बाप के साथ सवेरे सवेरे हम बगीचे में सैर करने जाते थे। एक दिन बाबा सामने आया, बाबा भी सैर करने गया था। जब बाबा को देखा तो बाबा में लाइट लाइट देखी, अनुभव हुआ कि जिस भगवान को ढूँढती थी, वह मिल गया। बाप को बोला, आपको अनुभव हुआ, तो कहा नहीं। मैंने कहा यह मेरा बाप है। जिस घड़ी बाबा में लाइट और माइट देखी, उसी घड़ी से भक्ति करना छूट गया। ज्ञान शुरू हो गया, अभी हमारी दिल खोलके देखो मेरे दिल में कौन है? एक बाबा के सिवाए दूसरा कोई नहीं। चक्र, झाड़ और सीढ़ी का ज्ञान स्पष्ट होता गया जिससे त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ तीनों लोकों के मालिक बन गये। सिन्धी में गाती थी अन्दर वेठो आई राम, बाहर निकली आह... ऐसे करके आँसू बहाते... बहुत प्यार से भजन गाती थी। आज मैं इस सीन को देख क्या बताऊं मेरे अन्दर कौन बैठा है! सिवाए एक बाबा के और कोई दिल में आ नहीं सकता। हर मुरली में बाबा कहता है बच्चे मनमनाभव, मामेकम् याद करो, बाबा की यही तात लात और बात दिल में है, तो दिलाराम जैसे हमारे अन्दर बैठा है। आप सबने यह बर्थ डे मना करके मेरे दिल को

पिघला दिया है। मैं क्या बताऊं और कैसे बताऊं...

एक समय था मेरे पास पेस्ट और टुथ ब्रुश भी नहीं था, कंधी भी नहीं थी, नीम की दांतून करती थी। पालड़ी में बगीचे में मोर नाचते थे, वहाँ बैठकर मैं अमृतवेला करती थी, बाबा ने शुरूआत में कैसे सेवायें कराई... वन्दर है। देश विदेश जहाँ भी जाओ, बाबा के बच्चों को देख मेरे दिल की भावना है, जी चाहता है हर एक के दिल में बाबा ही हो।

चित्त और चिंतन में क्या फर्क है? कहते हैं सत् चित्त आनन्द स्वरूप। चित्त में सच्चाई के बिगर और कुछ है ही नहीं। दिल, मन, चित्त में जो सच्चाई है इसके बिगर और कोई चिंतन करना आता ही नहीं है। चिंतन में है बस मेरा बाबा और बाबा ने जो इतना मीठा ज्ञान दिया है वही चिंतन में होने से चित्त बड़ा साफ और सच्चाई से भरपूर है। तो मैं आप बहन भाईयों को एक एक को सामने भी देख रही हूँ, साथ में भी देख रही हूँ। बाबा ने ऐसी दृष्टि वृत्ति बना दी है जो सभी बहुत-बहुत मीठे, प्यारे, सच्चे लगते हैं। आप लोगों ने मेरे को इतना बड़ा हार पहनाया, अभी मैं आप लोगों को बाबा की दी हुई कितनी मालायें पहनाऊं! मीठे बाबा ने गोद बिठाके, गले लगाया, नयनों पर बिठाके पार ले जा रहा है। तो आओ, अभी हम सभी साइलेन्स में बैठ बाबा की दृष्टि से शान्ति और प्रेम में लीन हो जाएं। अच्छा।

“सिम्पल रहकर सैम्पुल बनने के साथ तपस्वीमूर्त बनो”

प्यारे बाबा ने हमको अपने ही जैसा तपस्वी मूर्त बनाकर खूबसूरत बना दिया... आज की मुरली में बाबा ने कितना बारी कहा बच्चे मेरे को याद करो। ब्रह्मा की भुजायें गाई हुई हैं, हम उसकी भुजायें हैं। इस रथ की भी कमाल है। वह है भोलानाथ, यह है भागीरथ। कितना अच्छा है! फिर मम्मा को साथी बना दिया। जगत अम्बा माँ से पुत्र मांगते हैं, लक्ष्मी से धन मांगते हैं। ब्रह्मा से मांगते नहीं हैं, हमने भी ब्रह्मा बाबा से कभी मांगा नहीं है, पर उसने अपने जैसा तपस्वी, अव्यक्त, फरिश्ता बनाने के लिए हमारे ऊपर कितनी मेहनत की है। हमने भी बहुत दिल से प्यार से उसको देख देख करके फालो किया है। उसकी दृष्टि बड़ी अच्छी लगी है। ब्रह्मा मुख से हम बच्चे पैदा हुए और ब्रह्मा बाबा ने हम बच्चों को अपने जैसा तपस्वी मूर्त बनाया।

बाबा ने कहा योग अग्नि है तभी तो योग से विकर्म विनाश होते हैं, तो योग ऐसा लगाओ जो रहे हुए सब विकर्म विनाश हो जाएं। योग अग्नि भी है तो योग शीतल और मीठा भी बनाता है। कभी यह ख्याल नहीं आता है कि हमारे पास यह कमी है, नहीं सब कुछ है। क्या कमी है?

एक बुक लण्डन में तैयार कर रहे हैं “मुझे मरना है तो कैसे, जीना है तो कैसे?”, यह मेरी भावना थी बहुत समय से। यह मरजीवा लाइफ है, इसमें एक मरने का और एक जीने का फोटो भी डाला है। तो हमें बाबा को एक्यूरेट कॉपी करना है। जो भी लिखत होती है उसके ऊपर लिखते कॉपीराइट। यह जो बुक है मरने और जीने का, इसकी भले कॉपी करो, मना नहीं है। तो कोई ऐसा मरने का पुरुषार्थ करता है? मैं सदा ही यह प्रैक्टिस करती हूँ। शरीर भी ऐसा ही है, कुछ न कुछ खिटपिट करता रहता है।

एक बारी बाबा अपने कमरे में गद्दी पर बैठे थे, सामने मैं बैठी थी, बाबा बहुत अच्छा लग रहा था। ऐसा अच्छा लग रहा था जो वहाँ से हटने को जी नहीं चाहता था। दीदी ने कहा बाहर बहुत खड़े हैं। तो बाबा ने कहा बच्ची, ठहरो अभी सत्यनारायण की कथा चल रही है। उस घड़ी ऐसी भासना आई जैसे मैं सत्य नारायण स्वामी के सामने बैठी हूँ। फिर कहा यहाँ बाजू में आकर बैठो। बाजू में बिठाकर ऐसी करेन्ट आई जिसने अशरीरी बना दिया। तो जब कभी मैं पाण्डव भवन में होती हूँ तो वह अनुभव याद आने लगता है और मेरे साथ जो विदेशी बहन भाई होते हैं मैं उनको कहती हूँ गद्दी पर बैठ

करके यह भासना ले लो।

तो यह जो पुरुषार्थ है, शरीर में रहते भी अशरीरी रहना और ट्रस्टी रहना यानी सिम्पल रह करके सैम्पुल बनना, इसमें कोई खर्च नहीं है। बाबा एक तरफ कहता है सिम्पल रहो, दूसरी तरफ कहता है तपस्वी रहो। फिर अव्यक्त रहो क्योंकि और कोई काम है ही नहीं, जहाँ भी पाँव रखो तो पाँव धरती पर नहीं हैं। सेवा भले करो पर तपस्या भी करो। याद में रहना है तो कैसे रहना है! हमारा योग ऐसा हो जो और कोई बात याद न आये। सवेरे की बात शाम को याद नहीं। ऐसा योगयुक्त रहना है जो कोई भी बाजू में बैठे तो खुश होके जाये। यह टाइम बहुत अच्छा है, आपस में मिलके रहना और बाबा की यादों में रहना। जितना हम आपस में मिल करके रहते हैं तो मुस्कराते हैं। कभी कभी कोई कोई देशों में हम कहती एक दो को सामने ऐसे देखो और मुस्कराओ, इससे बहुत फायदा हुआ है। पहले मुस्कराना मुश्किल लगता था पर अभी मुस्कराना सीख गये हैं। जिसको मुस्कराना सहज है उसके लिए सब काम सहज हो जाते हैं। मैं बाबा के सामने हार्मोनियम बजाते गीत गाती थी तो बाबा खुशी में मुस्कराता था। हारमनी माना हार मानी झगडा टूटा, सेवा में कभी जिद्द और सिद्ध नहीं। अभी मेरा तो धरती पर पाँव नहीं है, जो बाबा को कराना है, वह आपेही करा लेता है। जो हुआ सो अच्छा, जो होगा सो अच्छा, जो हो रहा है सो अच्छा। तपस्या में सीरियस नहीं बनना है। तपस्वी की शक्ल कैसी होती है? तपस्वी की बैठक कैसी होती है? योग में अव्यक्त फरिश्ता रूप हम ही बने हैं। कितना अच्छा है। कोई कोई भाई बहन में थोड़ी आदत होती है उल्हना देने की, मुझे बताया नहीं, यह प्रोग्राम था। प्यार में इतने बड़े हार आदि पहनाकर खर्चा नहीं करो। सिम्पल रहने में अच्छा है। ज्ञानसरोवर में जन्म दिन मनाया था बहुत सिम्पल, कुछ भी हार फूल नहीं था।

जो भी किया मैं गुस्सा थोड़ेही करूंगी। एक गुस्सा होता है, एक उल्हना होता है, दूसरा क्या बोलूँ? भाई, यह मुझे अच्छा नहीं लगता है, यह भी नहीं बोलना है। जो हुआ अच्छा है, तो कभी नाराज नहीं होना, सदा खुश राजी रहना, यह भी एक बड़ी दिल वाले का काम है। जिसकी दिल अच्छी होगी वो ऐसा बोलेगा नहीं, सोचेगा नहीं। कभी ऊं आं नहीं करो, उल्हना नहीं दो।

बाबा कहते हैं - बच्चे आपकी चलन से, आपके सम्बन्ध-सम्पर्क से किसको भी गुणों की फीलिंग आये। जैसे ये बहुत शान्त रहते हैं, बातों में नहीं आते हैं, यह रमणीक रहते हैं, यह थोड़ा गम्भीर रहते हैं, यह सब पता तो पड़ता है। तो इसी रीति से भी हम देखें एक तो हमारा जो भी कर्म होता है वो हर गुणों से सम्पन्न होता है? चलते-फिरते मुझे अन्तर्मुखता के गुण की फीलिंग आती है? कोई काम नहीं है उस समय मैं एकदम बिल्कुल अन्तर्मुखी हो जाऊँ तो यह अभ्यास है? हमारे गुण-स्वरूप को देख दूसरे में गुणों को धारण करने की प्रेरणा आती है, उमंग-उत्साह आता है तो यह हो गया गुण दान। तो मैं अपने सम्पर्क द्वारा गुण दान कर रहा हूँ/कर रही हूँ? ये चेक करो। तो ज्ञान, गुण, शक्तियाँ और समय... यह चारों ही खजाने जो हैं, उससे अगर हम भरपूर रहें तो सम्पन्नता की स्टेज के अनुभवी हो गये। अगर इन चारों में से कोई भी एकाध खजाना कम है या नहीं है तो हम सम्पन्नता के स्टेज का अनुभव नहीं कर सकेंगे। कभी-कभी करेंगे नेचुरल नहीं होगा।

ऐसे ही बाबा कहते हैं इन खजानों को जमा करने का साधन क्या है? हम अपने पुरुषार्थ से खजाने जमा करते हैं। दूसरा है - हम जो एक दो को स्वमान देते हैं, स्वमान में रहते हैं तो उन निःस्वार्थ सेवा द्वारा हम पुण्य का खाता जमा करते हैं। और एक दो के साथ सेवा में भी निःस्वार्थ रहते हैं, बेहद में रहते हैं तो हमें दुआयें मिलती हैं। तो एक है अपने पुरुषार्थ से, दूसरी है दुआयें, तीसरा है पुण्य। यह तीन प्रकार से हम अपने खजानों को जमा कर सकते हैं। तो यह चेक करो। इसकी चाबी है निर्मान और निमित्त भाव। तो सम्पन्नता को हम इन बातों से चेक करें। निमित्त भाव में मैं-पन और मेरापन खत्म हो जाता है क्योंकि करावनहार बाबा है, मैं तो ट्रस्टी हूँ। सिर्फ घर-गृहस्थी वाले ही ट्रस्टी नहीं हैं। कोई भी हमारी ड्यूटी है तो भी हम ट्रस्टी हैं, मालिक तो हमारा बाबा है हम निमित्त हैं। तो निमित्त भाव में निर्मानता भी आती है। उनकी वाणी भी निर्मल होती है। तो एक निमित्त भाव में यह तीनों प्राप्तियाँ होती हैं। तो निमित्त भाव खजाने जमा की चाबी है। तो खजानों को जमा करके सम्पन्नता को धारण करना है, उसके लिए यह अटेन्शन हमको रखना है।

फिर है सम्पूर्णता, यह सभी बातें अगर हमारे में हैं, सर्व खजाने हमारे पास जमा हैं तो नेचुरल है हमारे में सम्पूर्णता आयेगी। तो कर्म में जब हम आते हैं तो निमित्त भाव, निःस्वार्थ भाव हो, दूसरा अगर हम अपने को सम्पूर्ण बनाते हैं, तो अशरीरी और डबल लाइट का अनुभव करें। बीच-बीच में मैं अशरीरी

आत्मा हूँ, इस अभ्यास को करना बहुत जरूरी है क्योंकि अन्त में हमें अशरीरी होकर घर जाना है। तो हमें अपनी अवस्था को चेक करना है। सम्पूर्णता माना सब खजाने सम्पूर्ण पूरे हों, परसेन्टेज ठीक हो। तो अनुभव के ऊपर आप अटेन्शन ज्यादा दो। अनुभवी बनों तो कभी भी नीचे ऊपर नहीं हो सकते हैं। चाहे कितना भी कोई गिराने की कोशिश करे लेकिन अनुभव की अर्थारिटी वाला अपने अनुभव में रहता है। तो इसी रीति से सम्पूर्णता की दो स्टेज हमने सुनाई एक अशरीरी भव के वरदान को प्रैक्टिकल में लायें। दूसरा फरिश्ता, डबल लाइट अनुभव में आयें। जो भी भिन्न-भिन्न प्रकार का बोझ आता है वो फरिश्ते रूप में बिल्कुल डबल लाइट बन जाये। तो यह है सम्पूर्णता की स्टेज।

तीसरी बात है समानता, वो तो सभी जानते हैं बाबा के समान बनना है। हमारा वायदा है हम आपके समान बनके ही शरीर छोड़ेंगे। अभी से समानता लाते रहेंगे तो बाबा जैसा समानता लाना, इसके लिए बाबा जिस विधि से चला वो विधि 100 प्रतिशत राइट है या वो रास्ता राइट है तब तो मंजिल पर पहुंचा अर्थात् अव्यक्त फरिश्ता बन गया। तो बाबा का रास्ता ही सही है तब तो मंजिल पर पहुँचेंगे। तो हम बाबा को फॉलो करने वाले हैं, कदम पर कदम रखने वाले हैं। तो जो भी हम संकल्प करें वो पहले बाबा से टेली करें। बाबा ने किया है ऐसा संकल्प? यह चलता ही है, यह होता ही है, यह रॉयल अलबेलापन आता है। तो हमें अभी इन सब बातों से हटके बाबा के समान हमको करना है। दूसरे को फॉलो तो करना ही नहीं है।

तो हमको बाबा समान बनना है, तो जो संकल्प करते हैं वो देखो बाबा ने यह किया, तो वो करो, नहीं तो नहीं करो। बस। बाबा ने जो कर्म किया, बाबा ने जो एक्टिविटी चलाई, तो बाबा ने क्या किया वो फॉलो फादर करना है, बस। और कुछ सोचने की जरूरत ही नहीं है। बाबा ने नहीं किया, मुझे नहीं करना है। बाबा ने किया है मुझे करना है। नया रास्ता बनाना ही नहीं है। कदम पर कदम उठाना है तो बहुत इज़ी है। तो ऐसे सम्पन्नता, सम्पूर्णता और समानता में ब्रह्मा बाबा जैसा बनना है। वास्तव में प्यार उसको कहा जाता है जो उसकी चलन हो, जो उसकी रूचि हो मेरा भी ऐसे हो। तो ऐसे हम अटेन्शन देंगे तो क्या बन जायेंगे? तीनों क्वालिफिकेशन आ जायेंगी। सम्पूर्णता भी आयेगी, सम्पन्नता भी आयेगी और समानता भी होगी। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

“स्वराज्य अधिकारी आत्मा की निशानियां - सूक्ष्म चेकिंग”

1- मीठे बाबा ने हम बच्चों को स्वराज्य अधिकारी बनाया है। बाबा कहते तुम हो मेरे राजा बच्चे। तो हे राजे अपने आप से पूछो - कि मेरे 10 मंत्री (कर्मेन्द्रियां) मेरा कहना मानते हैं? पहले यह मेरी स्तुति करते हैं? फिर मुझे आत्मा के जो संस्कार हैं वह संस्कार मेरी स्तुति करते हैं? जब मेरे संस्कार मेरी स्तुति करें अर्थात् आर्डर में रहें तब दूसरे भी स्तुति करेंगे। बाबा ने कहा 3 मंत्री हैं मुख्य। मन बुद्धि और संस्कार। तो मेरा मन सदा मेरे चरणों में रहता अर्थात् मैं जो पवित्र आत्मा हूँ, मेरा मन सदा ऐसा ही स्वच्छ पवित्र और सदा ऊंचा रहता? मेरा पहला मंत्री मेरे आर्डर में है? आर्डर में है तो शुद्ध संकल्प स्वतः रहेंगे। फिर यह क्यों आता मेरा यहाँ अपमान हुआ? यह संकल्प उठाना भी तो अशुद्धता है। अपने से पूछो मैं अपनी महानता की ऊंची स्थिति पर रहता? जब मैं उसी स्थिति पर रहूँगी तो सब मेरा मान करेंगे। कई कहते हैं मेरी वृत्ति अच्छी नहीं, मेरी वृत्ति चंचल होती है, अगर मैं यही रिपोर्ट करती तो मैं दूसरे से क्या मान माँगू। पहले तो अपनी रिपोर्ट बन्द करो। तू पहले अपने मन्त्री से तो प्यार पाओ पीछे दूसरे से मांगो। अगर वृत्ति चंचल है माना मन्त्री कन्ट्रोल में नहीं है।

2- कहते हैं दक्ष प्रजापिता ने यज्ञ रचा। अब दस शीश वाले रावण को स्वाहा करने के लिए हमारे बाबा ने यह रुद्र यज्ञ रचा है। इसमें ब्रह्मा बाप के साथ ब्राह्मण बच्चों ने अपना सब कुछ स्वाहा कर दिया। तो हरेक पूछे मैंने अपने दस राक्षसों को स्वाहा किया है? इन्द्रिय जीत बनने का मतलब है अपनी कर्मेन्द्रियों को दिव्य बनाना। तो चेक करो कि मेरे कान दिव्य बने हैं? या अभी तक कनरस सुनने का शौक है? परचिन्तन पतन की ओर ले जायेगा। फिर ऐसा परचिन्तन वाला मान पा सकता है? हमारे यह नयन दूसरे को प्यार की भावना से, भाई-भाई की दृष्टि से, बाबा के रत्न देखने के लिए हैं, अगर यह नयन बुरी दृष्टि से देखते, द्वेष की दृष्टि से देखते तो क्या यह नयन मुझे मान देंगे! अगर नयनों ने बुरी नज़र से देखा, द्वेष दृष्टि डाली तो मेरे नयन ही मुझे अपमानित करते। दुःख देते फिर दूसरे से मान कैसे मिलेगा।

3- कोई कोई कहते हैं यह मुझे इतना प्यार नहीं देता। मैं पूछती तुमने अपने को कितना प्यार किया? मैं अपने संकल्प को शुद्ध रखूँगी तो प्यार मिलेगा। मेरी बुद्धि अगर परचिन्तन में घूमती, सत्यता को छोड़, स्वच्छता को छोड़ असत्यता की ओर जा रही है तो पहले मेरी बुद्धि ने ही मुझे प्यार नहीं दिया।

अगर बुद्धि ही प्यार नहीं करती तो दूसरे क्या करेंगे! पहले देखो - मेरे संस्कार मुझे रिस्पेक्ट देते हैं? मैंने अपने संस्कारों की चंचलता को स्वाहा किया है? अगर मेरे संस्कार ही मुझे रिस्पेक्ट नहीं देते तो दूसरे क्या देंगे!

4- जिसमें जरा भी मूड आफ की आदत है, उसे मान मिल नहीं सकता। मूड आफ माना आफ। उसे कौन सी प्रेम की आफर मिलेगी! उसे कौन आफरीन देगा? अगर कहते आफ होने की आदत है, तो आदत शब्द ही बुरा है। दिव्यता माना गुण। मेरा गुण है - दिव्य रहना। जहाँ दिव्यता है वहाँ मान अपमान का सवाल समाप्त हो जाता। जहाँ मांगते हो कि मान मिले, वहाँ वह दूर हो जाता है। आज के राजनेतायें मान के लिए चेर मांगते, आज मिलती कल चेर उठाकर फेंक देते क्योंकि है ही प्रजातन्त्र। हम तो राजाओं के राजा हैं, हम कभी मांग नहीं सकते। राजा कभी नहीं कह सकता कि यह चपरासी मेरी इज्जत गंवाता है। राजा का तो आर्डर चलता। तो पूछो मैं राज्य-अधिकारी हूँ या मैं अपने चपरासियों के अधीन हूँ?

5- अगर कोई कहते हैं क्या करूँ - गुस्से में मेरा हाथ चल गया! अरे चल गया या तूने चलाया? कहते हैं न चाहते भी गाली निकल गई। अरे मुख किसका गंदा हुआ! जिसने गाली दी उसका मुख बासी हुआ। तू बासी मुख वाले को मुंह क्यों देते! तुम उनसे मुख मोड़ लो। तुम उनके साथ गंदा क्यों बनते हो!

6- कई दीवालों पर बने हुए गन्दे चित्रों को देख कहते मेरी आंख खराब हो गई। अरे वह तो जड़ है, मैं चैतन्य, मैं अगर कहूँ मुझे यह पिक्चर का चित्र अपनी तरफ खींचता तो मेरा वह राजा हुआ, मैं प्रजा हो गई। एक दीवाल का चित्र मेरा चित काट लेता। वह चित्र मेरा दिलाराम बन गया। जिसने दिलाराम बाप से दिल तुड़ा दी। जो किसी पर खिंच जाता, आकर्षित होता वह है दिलबेकू। दिल बेचने वाला दिलबेकू नहीं बनो। दिलाराम बाप के दिलाराम बच्चे बनो।

7- मीठे बाबा ने कहा है तुम शरीर निर्वाह लिए कर्म करो, क्या चित्र देखने की, नाविल्स पढ़ने की बाबा ने किसी को छुट्टी दी है! कहते हैं दिल उदास होती है तो पढ़ लेता हूँ। पढ़ोगे, देखोगे तो जरूर वह बुद्धि को डिस्टर्ब करेगा। जब पहले जन्म से मर गये फिर वह पहली बातें क्यों याद करते, मरते क्यों नहीं? अच्छा - ओम् शान्ति।

टीचर्स की आपस में रूहरिहान - कार्यशाला - स्व-परिवर्तन

संसार में हम सब कुछ बदल देना चाहते हैं, पर स्वयं को परिवर्तन नहीं करना चाहते, जबकि सृष्टि में सब कुछ परिवर्तनशील है। हर क्षण परिवर्तन होता ही रहता है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है लेकिन जब बाबा सृष्टि पर आते हैं तब वह हमें सबसे पहले स्व-परिवर्तन करने के लिए ही कहते हैं।

हमें स्व-परिवर्तन क्या करना है?

1. हमें वह सब परिवर्तन करना है जो बाबा कहते हैं, अन्दर का सूक्ष्म भाव-भावना, विचार, वायब्रेशन, वृत्ति, दृष्टि, बोल, संस्कार, व्यवहार, आचरण, कर्म, बुद्धि, मन, स्मृति, चलन, जीवन शैली, जीवन ये सब परिवर्तन करना है।
2. अपने ओरिजिनल स्वरूप को लाना है, आदि, अनादि स्वरूप को लाना है।
3. पूरा बाबा को फालो करना है, बाबा जैसा बोल, कर्म, बाप समान बनना है। जो बाप समान नहीं वह सब बदलना है।
4. देह-भान को परिवर्तन करना है। स्वभाव को परिवर्तन करना है।

स्व-परिवर्तन क्यों करना है?

1. क्योंकि सृष्टि परिवर्तन का समय है, प्रकृति परिवर्तन, युग परिवर्तन का समय है।
2. संसार परिवर्तन करने के लिए स्व-परिवर्तन करना होगा।
3. स्वयं का परिवर्तन एकजाम्पल बनने के लिए करना चाहिए।
4. स्वयं का परिवर्तन नहीं करेंगे तो समय आगे निकल जायेगा। हम पीछे रह जायेंगे। फिर समय शिक्षक बन जायेगा। हमारा शिक्षक तो बाबा है और जो समय के साथ चलता है व आगे चलता है वह वैल्यूबल बन जाता है।
5. सेन्टर का वातावरण व वायब्रेशन ठीक रखने के लिए स्व-परिवर्तन करना चाहिए।
6. हम आये ही हैं परिवर्तन करने के लिए। ज्ञान लिया ही है ब्रह्माकुमारी बने ही हैं परिवर्तन करने के लिए।
7. बाबा से सच्चा प्यार है उसकी पालना का रिटर्न देने के लिए टर्न करना है।

8. बाबा भी यही चाहते हैं, लौकिक, अलौकिक परिवार व हमारे बड़े भी यही चाहते हैं, दुनिया भी यही चाहती है कि हम परिवर्तन हो जायें और हम भी तो परिवर्तन चाहते हैं इसलिए हमें स्व परिवर्तन करना चाहिए।

स्व-परिवर्तन कैसे करना है?

1. स्व-परिवर्तन के लिए साक्षीपन चाहिए व सहन शक्ति चाहिए। एकान्त में बैठकर अन्तर्मुखी बन स्व-निरीक्षण करें तो सहज परिवर्तन कर सकते हैं।
2. जितना हम आत्माभिमानी रहेंगे, डिटैच रहेंगे तो पुराने संस्कार परिवर्तन होते जायेंगे। मर्ज रहेंगे, इमर्ज होने का चान्स नहीं रहेगा।
3. स्वयं पर फुल अटेन्शन रखकर स्वयं को परिवर्तन कर सकते हैं।
4. स्वपरिवर्तन के लिए योगबल जमा करना है, ट्रैफिक कन्ट्रोल पर, सारी दिनचर्या पर फुल अटेन्शन देना है। शाम को व अमृतवेला नियमित व पावरफुल योग करना होगा। योग साधना से ही हम बदल सकते हैं।
5. सच्ची दिल से अगर हम परिवर्तन के लिए पुरुषार्थ करते रहेंगे, अगर कुछ कमी रह जायेगी तो बाबा ग्रेस मार्क दे देगा तो पूरा परिवर्तन हो जायेगा। दिलशिकस्त कभी न हो।
6. जो भी संकल्प करें, उसमें बहुत अच्छी दृढ़ता हो।

स्व-परिवर्तन से क्या-क्या फायदे हैं?

1. स्व-परिवर्तन करने से स्वयं से सन्तुष्ट रहेंगे, दूसरे भी सन्तुष्ट रहेंगे, वह खुशी रहेगी।
2. बाबा की व दूसरों की दुआयें मिलती रहेंगी।
3. स्व-परिवर्तन करके दूसरों को सही गाइड कर सकेंगे, नहीं तो मिस गाइड करके अपने ऊपर पापों का बोझा चढ़ायेंगे।
4. स्व-परिवर्तन करके संगठन में एडजस्टेबल बन सकते हैं।
5. सर्व से सहयोग, स्नेह और सम्मान प्राप्त कर सकेंगे।
6. हम यज्ञ के बहुत जिम्मेवार हैं, हम सामान्य नहीं, हम गुरुभाई की सीट पर बैठे हैं, हमें यज्ञ की प्रगति करने के लिए स्व परिवर्तन करना ही है।